International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
Vol. 2, Issue 10, Oct 2015 IF- 3.561 ISSN: (2394-4218)
© Associated Asia Research Foundation (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email:editor@aarf.asia, editoraarf@gmail.com

आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में रामायण की प्रासंगिकता

लेखकः डॉ नरेन्द्र कौशिक
एसोसिएट प्रोफैसर
सोहन लाल डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय
अम्बाला शहर
अणुडाकःkaushik.drnarender2@gmail.com

संक्षेप सार

इस शोधपत्र में रामायण महाकाव्य के शैक्षिक परिदृष्य का अवलोकन करवाने की कोषिष की गई है क्योंकि रामायण मात्र एक राजा और उसके परिवार के जीवन का वृतांत भर ही नहीं है बल्कि सांसारिकता का अनूठा उदाहरण है। इसमें कहीं भाई–भाई का प्यार दर्षाया गया है, कहीं बेटे की पिता के प्रति निष्ठा दर्षाई गई है। पत्नीधर्म, दोस्तीधर्म, विद्वता, बहादुरी, चतुराई, सती जती के साक्षात दर्षन इत्यादि के माध्यम से समाज को लाभान्वित होने का अनूठा अवसर प्राप्त होता है। इसमें भोग विलास नहीं त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। प्रेम, त्याग, बलिदान और समर्पण के भाव को दर्षाते हुए इस महाकाव्य के शैक्षिक दर्षन को उजागर करने का एक सार्थक प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

आज इस वैज्ञानिक युग में प्रत्येक माता–पिता की सर्वोपरि इच्छा है– अपने बालक को सर्वोत्तम षिक्षा उपलब्ध कराना। इस लालसा पूर्ति के लिए वे अपनी धन दौलत के साथ–साथ कई बार अपने बच्चों के कोमल मन को भी दाँव पर लगा देते हैं, क्योंकि इस मषीनीकरण के युग में बालक डिग्री तो बड़ी प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन मानवता व सामाजिकता उनसे कोसों दूर चली जाती है। एक दिन आता है जब पारिवारिक मोह माया के बन्धन को तोड़कर वह पंछी कहीं दूर उड़ जाता है और रह जाते हैं पीछे हाथ मलते हुए मातापिता। जी हाँ, यह परिस्थिति आज आम हो गई है और पीछे छोड़ती जा रही है सुरसा की तरह मुँह फैलाए एक प्रष्न–आखिर इस परिस्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है? क्यों आज मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है? प्रबुद्ध जन इस के पीछे बहुत से कारक निहित हैं, लेकिन उन सबमें प्रमुख है– भारतीय संस्कृति के प्रति विमुखता। वह समृद्ध

संस्कृति जो पौराणिक ग्रन्थों में रची बसी हुई है उसका आज बालक से दूर दूर का नाता भी नहीं रह गया है। उसी संस्कृति की सुगन्ध आप तक पहुँचाने के लिए यहाँ चयन किया है– महाकाव्य रामायण का।

शोधपत्र का चयनित विषय

"आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में रामायण की प्रासंगिकता"

शोध कार्य का औचित्य

विद्वत जन एक ष्लोक पर सम्पूर्ण रामायण की रचना हुई मानी जाती है।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमःशाश्वतीः समा।

यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

वास्तव में ये दो पंक्तियाँ उस श्राप की द्योतक हैं जो कि महर्षि वाल्मिकी द्वारा क्रोध में उस व्याध को दिया गया था, जिसने क्रीड़ामग्न क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से एक को अपने तीर से मार गिराया था। एक सीधे सादे प्रेमी जीव की हत्या और उसकी वियोगिनी के करूण क्रन्दन से महर्षि वाल्मिकी का हृदय द्रवित हो गया था और उनके मुख से यह षोकोद्गाार निकल पड़ा– रे निषाद! तुझे अनन्त काल तक कहीं भी सद्गति प्राप्त न हो क्योंकि तूने इस जोड़े में से एक जीव को अकारण मार डाला है।

लेकिन जब उन्होंने इन पंक्तियों के अर्थ पर विचार किया तो बहुत पष्चाताप हुआ कि मैनें क्षणिक आवेष में घोर श्राप दे दिया है क्योंकि साधुजन की यह प्रवृत्ति नहीं है, वे तो अपने दुष्मनों के अपराधों को भी क्षमा कर देते हैं। इसी उहापोह में उनके अन्तःकरण में देर तक मन्थन चलता रहा तथा सहसा उन्हें इस वाक्य का दूसरा ही अर्थ सूझ गया, जो इस प्रकार था– हे श्रीमान अर्थात् राम आप अनन्तकाल तक लोक में प्रतिष्ठित रहेंगे क्योंकि आपने कुटिल, कुचाली, नीच राक्षसा वृत्ति से युक्त दम्पत्ति में से एक का संहार किया है। इतना सूझते ही महर्षि की हृदयतन्त्री में सरस वृत्तियाँ जाग गई। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो क्रौंच बध किसी महान कार्य के लिए दैवी संकेत था और उन्होंने राम का जीवन काव्य लिखने की ठान ली। आज के विद्यार्थी के लिए इससे सन्देष मिलता है कि एक विद्यार्थी को हमेषा साधु जन्य व्यवहार करना चाहिए। क्षणिक आवेष में कोई निर्णय ना लेकर उस परिस्थिति पर गहन अध्ययन व चिन्तन मनन करना चाहिए।

सामाजिक व पारिवारिक परिदृश्य

प्रबुद्ध जन आज की सामाजिक व पारिवारिक स्थिति बहुत ही दयनीय दषा से गुजर रही है। मनुष्य अपने दुःख से दुःखी ना होकर दूसरे के सुख से दुःखी हो रहा है। भाई भाई का दुष्मन बन गया है। इस परिस्थिति का बड़ा सुन्दर हल हमें रामायण में मिलता है। राजा दषरथ के चारों पुत्र अलग–अलग माताओं से जन्मित थे। लेकिन उनके आपसी प्रेम और भाईचारें का उदाहरण सर्वविदित है। जहाँ एक ओर राम–लक्ष्मण की जोड़ी को उद्धृत किया जाता है तो मैं यहाँ बताना चाहूँगा कि भरत और षत्रुध्न की जोड़ी भी इसी तरह मषहूर

थी। इसके साथ छोटों के प्रति राम का असीम स्नेह व छोटे भाइयों की राम में असीम भक्ति भी आज के विद्यार्थी में नैतिक गुणों का विकास करने का एक अमोध अस्त्र मानी जा सकती है।

शैक्षिक परिदृश्य

रामायण में एक ओर हम जैसे अध्यापकों के लिए भी बहुत अच्छी सीख दी गई है तो दूसरी ओर महर्षि विष्वामित्र के चरित्र के माध्यम से षिक्षार्थियों को भी लाभान्वित होने का अनमोल अवसर उपलब्ध करवाया गया है। इसका एक उदाहरण यहाँ पर उद्धृत है– गुरू वषिष्ठ के आश्रम से षिक्षा प्राप्त करने के बाद जब चारों भाई अयोध्या नगरी आए तभी महर्षि विष्वामित्र ने आकर राजा दषरथ से उनके बड़े बेटे राम को ऋषियों की राक्षसों से रक्षा करने के लिए साथ भेजने का आग्रह किया। उस समय राम की उम्र केवल 15 वर्ष थी। उस बालक के मोह में फँसकर राजा दषरथ उसकी जगह स्वयं उनके साथ जाने की याचना करते हैं, तब गुरू वषिष्ठ राजा दषरथ को आष्वस्त करते हुए राम को महर्षि विष्वामित्र के साथ भेज देते हैं। यहाँ पर एक ओर जहाँ गुरू का अपने षिष्य के ज्ञान व युद्धकला पर भरोसा दर्षाया गया है वहीं दूसरी ओर महर्षि विष्वामित्र को एक अच्छे अध्यापक व गुरू के रूप में प्रस्तुत किया गय है जो अपना सर्वश्रेष्ठ व सम्पूर्ण ज्ञान तथा गुप्त विद्याएँ सहर्ष अपने षिष्य को सिखाने का अथक प्रयास करता है। श्री राम को ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र, नारायणास्त्र व कालचक्र आदि दिव्यास्त्र महर्षि विष्वामित्र ने ही प्रदान किए थे जिनके सहारे उन्होंने रावण पर तो विजय पाई ही बल्कि वह वास्तव में राम राज्य की स्थापना करने में भी सफल हुए।

बुराई में भी अच्छाई की खोज

रामायण में विभिन्न पात्रों की अच्छाईयों से तो हमें सीख मिलती ही हैं इसके अतिरिक्त कुछ पात्रों की कुटिलता व छल से भी व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है। उदाहरणार्थ केकैयी जो कि भरत की माता थी लेकिन राम से अगाध प्रेम करती थी और उन्हें अपना ज्येष्ठ पुत्र मानती थी वह भी अपनी दासी मन्थरा के कुटिल जाल में फँसकर राम के लिए वनवास माँग लेती है। इससे हमें षिक्षा मिलती है आज हमारे चारों ओर फैले ऐसे कुटिल प्रवृत्ति के मित्रों, सगे सम्बन्धियों व नौकर चाकरों से सावधान रहना चाहिए और अपनी बुद्धि और विवेक से काम लेना चाहिए। दूसरी ओर माना कि प्रतिषोध की ज्वाला में जल रहे रावण ने सीता का अपहरण कर लिया लेकिन इसके बाद भी उन्होंने ना तो कभी सीता को छूने की कोषिष की और ना ही उसकी ओर आँख उठा कर देखा। इससे भी आगे जब श्रीराम चन्द्र जी ने समुद्र किनारे यज्ञ करने के लिए रावण को पुरोहित रूप में आने का न्यौता भेजा तब न केवल उसने इस निमन्त्रण को स्वीकार किया बल्कि सीता जी को भी ससम्मान अपने साथ यज्ञ में लेकर आया क्योंकि वह जानता था कि बिना अर्द्धांगिनी के यज्ञ पूर्ण नहीं होता।

त्यागमूर्ति व तपस्विनी नारी प्रेरणा

रामायण से ही एक और जहां हमें सीता सी अर्धांगिनी की परिभाषा मिलती है व त्यागमूर्ति से परिचय होता है तो दूसरी और उर्मिला श्रुतकीर्ति के त्याग व पतिव्रता धर्म से सीखने का मौका मिलता है। वनवास गमन के समय लक्ष्मण अपनी माँ से तो आज्ञा ले लेता है लेकिन पत्नी के पास जाते समय उसका मन षंकित हो

जाता है कि कहीं उर्मिला इस कार्य में विघन ना डाल दे। लेकिन धन्य है वो देवी जो पहले ही आरती की थाली सजाए हुई थी अपने पति को उसके कर्त्तव्य पथ पर खुषी के साथ भेजने के लिए। दूसरी ओर शत्रुध्न की पत्नी श्रुतकीर्ति ने पतिव्रता धर्म को बखूबी निभाया और किसी को कानों कान खबर नहीं होने दी कि वह स्वयं और उसका पति इतने दिनों से साधु साध्वी का जीवन जी रहे हैं।

भ्रातृत्व भाव की पराकाष्ठा

श्रामायण महाकाव्य में राम लक्ष्मण और भरत का भ्रातृत्व भाव तो जग जाहिर है लेकिन शत्रुध्न के बारे में ज्यादा नहीं कहा जाता है। यहाँ उद्धृत किया जा रहा है कि जब महाराज भरत ने श्री राम की चरणपादुका राजसिंहासन पर रख दी और स्वयं नगरी से बाहर कुटिया में रहना शुरू कर दिया तब शत्रुध्न ने भी छोटा भाई होने का उदाहरण प्रस्तुत किया और अयोध्या के मुख्य मार्ग के द्वार से लगे एक पत्थर पर सिर टिका कर सोना स्वीकार कर लिया क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसके भाई तपस्वी का जीवन जीएँ और वह राजसी ठाठ बाठ से रहे।

शिक्षार्थी दर्शन

रामायण में अगर हनुमान जी की भक्ति का जिक्र ना किया जाए तो सबकुछ अधूरा सा लगता है। जहाँ हनुमान की राम के प्रति भक्ति जग जाहिर है वही उसकी सोच का एक अच्छा उदाहरण यहाँ पर बालकों के लिए अच्छी सीख दे जाता है– सीता जी की खोज में सारी लंका का भ्रमण करने के उपरान्त भी जब हनुमान को सीता का पता नहीं चलता है तब वह बहुत दुःखी होकर हतोत्साहित हो जाता है तथा अपने प्राण त्यागने की सोचता है तभी उसका विवेक जाग उठता है एवं उसमें उत्साह का संचार हो जाता है। वह मन ही मन कहता हैः

करोति सफलं जन्तोः कर्म यच्च करोतिचः।

तस्मादनिर्वेदकरं यत्नं कुर्मादनुत्तमम्।।

अर्थात् उत्साहपूर्वक जीव जो काम करते हैं, उत्साह उनके उस काम को सिद्ध करता है। अतः मैं अब दोबारा उत्साहपूर्वक सीता जी को ढूंढने का प्रयत्न करता हूँ। इस बात से हमें सीख मिलती है कि क्षणिक असफलता से हमें हार नहीं माननी चाहिए बल्कि दोगुणे उत्साह से हमें उस कार्य को करने का प्रयत्न करना चाहिए फिर सफलता अवष्यमेव हमारे कदम चूमेगी।

एक अन्य प्रसंग सर्वविदित है कि रावण श्रीराम का सबसे बड़ा षत्रु होते हुए भी उस समय का प्रकाण्ड पण्डित था, उसमें ज्ञान का अथात भण्डार भरा हुआ था। जब रावण मृत्यु षैय्या पर था तब राम ने लक्ष्मण को उससे ज्ञान लेने के लिए भेजा। अनमने मन से ही सही भाई की आज्ञा पालन करते हुए लक्ष्मण रावण के पास जाकर उसके सिरहाने की ओर खड़ा हो गया और कहा कि अपने ज्ञान का प्रचार करो। तब रावण ने मौन धारण कर लिया और लक्ष्मण को कुछ भी ज्ञानवर्धक नहीं बताया। लक्ष्मण वापिस गया और राम को जाकर

बताया कि उस घमण्डी ने एक षब्द भी नहीं बोला तब श्रीराम ने कहा कि तुम ज्ञान लेने गए तब रावण के पास कहाँ जा कर खड़े हुए थे। लक्ष्मण ने बताया कि उसके सिर के पास खड़ा था। यहाँ श्रीराम उसे बताते हैं कि जब हम किसी से ज्ञान की इच्छा प्राप्ति करते हैं तो हमें उसके चरणों में बैठकर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और स्वयं इसका जीता जागता उदाहरण प्रस्तुत करते हुए स्वयं चलकर रावण के पैरों की ओर खड़े होकर उन्हें प्रणाम करते हुए पूछा की हे महापराक्रमी रावण आप इतने बलषाली होते हुए भी कैसे हार गए। तब रावण ने सीख देते हुए कहा कि हे राम तुम्हारे पास तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारा भाई सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए खड़ा था लेकिन मेरा भाई विभीषण मेरा साथ छोड़कर तुम्हारी संगति में चला गया जिसने मेरा राज तुम्हें बताया और मुझे मृत्यु गति प्राप्त हुई। रामायण की यह सबसे बड़ी सीख है अगर भाई–भाई का दुष्मन हो जाता है तब दुनिया की कोई भी ताकत सर्वनाष होने से नहीं बचा सकती है।

निष्कर्ष

सार रूप में कहा जा सकता है कि रामायण महाकाव्य केवल मात्र एक कथा ही नहीं है बल्कि शुरू से लेकर अन्त तक सीख से भरा हुआ अक्षय पात्र है। यह भोग विलास की नहीं बल्कि त्याग की परिचायक है और उस त्याग की दौड़ में सभी पात्र एक दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं। यह महाकाव्य हमें जीवन जीने की अद्भुत कला से परिचित कराता है। इसमें दर्षाया गया है कि प्रेम त्याग समर्पण और बलिदान से ही राम राज्य की स्थापना की जा सकती है। भोगविलास और स्वार्थ मनुष्य को अधोगति की ओर लेकर जाता है।

इस प्रकार रामायण महाकाव्य इस सृष्टि को ज्ञान पथ पर चलाकर सर्वदा उन्नति के द्वार खोलता सा प्रतीत होता है।

रामायण महाकाव्य स्वयं में, है शिक्षा की खान।

इसके हर पात्र से मिलता, हम सबको असीम ज्ञान।।

रामायण की शिक्षाओं को, व्यवहार में अपने ढ़ालो।

आदर्श चरित्र बना राम सा, जीवन सफल बना लो।।

सन्दर्भ सूची

1. वाल्मिकी रामायण– प्रकाषक, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
2. श्रीमद्वाल्मिकी रामायण– प्रकाषक, रामनारायण लाल, इलाहाबाद।